RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

हिन्दी निबन्धों में विषय की सार्थकता

Sharda Devi

(Research Scholar)

निबन्ध आधुनिक सहित्य की एक महत्वपूर्ण विषय हैं। जीवन ज्यों-ज्यों जटिल, मशीनी, तर्कप्रधान और बौध्दिक होता जा रहा हैं, बहुत सी भावात्मक विधाएं अपना महत्व खोती जा रही हैं। कई तो आधुनिक युग के अनुरूप अपने आत्मा और कलेवर में ऐसा परिवर्तन करना पड़ रहा है कि उन्हे पहचानना तक मुश्किल हो गया हैं। कविता के साथ ऐसा ही हुआ है। इसी प्रसंग में 'यह गध युग है' - जैसे वाक्यां का औचित्य कुछ न कुछ स्वीकार करना पड़ता हैं। अलगांव, बौध्किता और टूटते हुए मूल्यों के संक्रमण काल में जो विधा अधिक उपयुक्त, सक्षम और अर्थ संवहन के योग्य प्रमाणित हो रही है वह निःसन्देह निबंध है।[१]

इसी कारण व्यक्तिव्यंजक निबंध लेखक के व्यक्तित्व के सच्चे अभिसाक्ष्य होते है। ''निबन्धकार अपना फोटोग्राफर स्वयं हैं।'' जैसा कि ओरलो विलियम्स कहता है- ''निबन्ध लेखक अपनी वैयक्तिकता की समुची विचिगताओं को चित्रित करने के लिए अपनी लेखनी को स्वच्छंद छोड़ देता हैं।''[२]

हिन्दी निबन्धो में आचार्य रामचन्द्र शुकल जी के निबन्धो में चंचल मन के क्षण प्रतिक्षण चलचित्र की भांति आने वाले मनोविकार जैसे उत्साह, श्रध्दाभक्ति, करूण, लज्जा, ग्लानि, लोभ और प्रीति, घृणा ईर्ष्या भरा, क्रोध आदि का तांडव किस स्थिति में क्या सुर ताल दिखाता हुआ मानव को निर्णायक से अनिर्णायक, कठोर से मुलायम और क्रोधी से प्रेमी, अपराधी से निरपराधी बनाता हुआ और सही क्रम बदलता हुआ भी प्रतीत होता है। जैसा कि उन्होने अपने ईर्ष्या निबन्ध में दर्शाता है-''जैसे दूसरे के दर्द को देख दुख होता है वैसे ही दूसरे के सुख कहते हैं।''[३]

कही-कही तो हिन्दी निबधों में सार्थकता को सिद्ध करने के लिए जीवन प्रवाह को अनन्त दिखाया गया है। जिस प्रकार श्री पुन्नालाल बरसी ने अपने निबंध 'मोटर स्टैण्ड़ पर' में लिखा है- ''राजा ने पूछा-और तब? वह कहने लगा तब और एक जंगल से चिड़िया आई। वह कोठे में घुस गई और चोंच में अनाज के कुछ दाने लेकर उड़ गई।'' उन्होने इस माध्यम से मानवता का सजीव चित्रण करते हुए कहा है-''यही हम लोगों की जीचन कथा भी है। प्रकृति अनन्त है। जीचन की गति का भी अन्त नही है। संसार में एक आता है और अच्छे बुरे कर्म कर और कुछ सुख दुख का उपभोग कर चला जाता है।''[४]

हरिशंकर परसाई जी ने अपने निबन्ध 'घायल बसन्त में यौवन के बाद बढती उम्र में विवाह होने पर सार्थक व सजीव चित्रण में व्यक्यात्मक लेखनी चलाई। जैसे-''मैं बाहर निकल पड़ता हूँ। चौराहे पर पहली बसंती साड़ी दिखी। मैं उसे जानता हूँ। यौवन की एड़ी दिख रही है- वह जा रहा है-वह जा रहा है। अभी कुछ महीने पहले ही शादी हुई है। मैं तो कहता आ रहा था कि चाहे कभी ले, 'रूखी री डाल वसन वसन्ती लेगी'-(निराला) उसने वसन वासन्ती ने लिया। कुछ हजार में उसे यह बूढ़ा हो रहा पति मिल गया।''[५] कई बार वे परसाई जी ने मानव के शारीरिक अंगो के साथ अपनी सटीक भाषा शैली में करारे प्रहार किए-'' आज पहिला सफेद बाल दिखा। कान के पास काले बालो के बीच से झांकते हुए इस पतले रजत तार ने सहसा मन को झकझोर दिया है। या किसी पार्क के कुंज में अपनी राधा को हृदय से लगाए प्रेमी को एकाएक राधा का बाप आता दिख जाए।''[६]

बाबू गुलाब राय अपने निबन्ध सग्रहो में मौलिकता भरते हुए निजी जीचन की ऐलबम दिखाते है। एक चित्र उनके 'मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ' में से-'' खेर आजकल उसका (भैंस का) दूध कम हो जाने पर भी और अपने मित्रो को छाछ भी न पिला सकने की विवशता की झूंझल होते हुए भी, सुरराज इन्द्र की तरह मुझे भी मठा दुर्लभ हो जाता है- तत्रं शत्रस्य दुर्लभम्।'' इसी खेमे के निबन्धकारों में रामवृक्ष बेदीबुरी जी का 'गेहूं बनाम गुलाब' निबन्ध पढकर कुछ अटपटा सा लगता है, किन्तु ज्यों-ज्यों आप आगे बढते जाएगें। छोटे-छोटे वाक्य अपनी पैनी और अर्थ भरी आंखो से आपके मन को मोहते चले जाते है।[७]

राधाकृष्ण मूल्याकन माला में प्रस्तुत निबंध संग्रहों में हिन्दी के प्राचीन तथा नवीन कवियों सहित्यकारों तथा विशिष्ट कृतियो में प्राचीन काव्य से संबध रखने वाले काव्यशास्त्र जैसे तुलसी कृत रामचरितमानस, सुरदास द्वारा कृत सुरसागर को उठाया गया है-''तुलसी पांच वर्ष के बालक के रूप में उत्पन्न हुए थे और जन्मते ही इन्होने 'राम' नाम का उच्चारण किया। इसी से इन्हे 'रामबोला' नाम मिला। इनकी कृतियो में इसी नाम का उल्लेख है-

राम को गुलाम नाम रासबोला राख्यों राम।
काम महै नाम द्वै हौ कबहूँ कहत हौं।

उपायुर्क्त कथनों से व्यक्त होता है कि उनका नाम रामबोला था, पर वह बचपन का नाम था। इसके पश्चात इनका प्रसिद्व नाम तुलसीदास हो गया।[८]

हिन्दी की सुप्रसिद्व लेखिका महोदेवी वर्मा सामाजिक जीवन का चित्रण करते हुए गद्य में निबंध कला की सार्थकता बढाती हुई लिखती है-''खेत में लकड़ी पर औधाई हुई मटकी-जैसे सिर को हिलाते क्या बताया, पर जब उसने ऊपर मुख उठाकर नमस्कार किया तब ऐसा जान पड़ा मानो नमस्कार का लक्ष्य खजूर का पेड़ है।''[९]

आधुनिक हिन्दी निबन्धो में सहित्यकारो ने सामाजिक समस्याओ के साथ-साथ आर्थिक समस्याओं को प्रमुख स्थान दिया है। जैसे सरदार पूर्ण सिंह जी ने अपने निबन्ध मजदूरी और प्रेम में हल चलाने वाले किसान के जीवन पर कुछ इस प्रकार प्रकाश डाला है, ''हल चलाने वाले और थेड चराने वाले प्रायः स्वभाव से ही साधु होते है। हल चलाने वाले अपने शरीर का हवन किया करते है। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवन कुण्ड की ज्वाला को किरणें चावल के लम्बे और सफेद दानों के रूप में निकलती है। गेहूं के लाल-लाल दाने इस अग्नि की चिनगारियों की डालियां सी है।'' किसान मुझे अन्न में, फूल में, फल में, आहुति हुआ-सा दिखाई देता हैं।''[१०] सरदार पूर्ण सिंह जी ने अपने निबन्ध मजदूरी और प्रेम में रोचकता इस तरह भरी कि मजदूर का जीवन स्नेह भरा नजर आता है जैसे-'' मुझे तो मनुष्य के हाथ से बने हुए कामों में उनकी प्रेमभरा पवित्र आत्मा की सुगन्ध आती है। राफल आदि के चरित्र चित्रों में उनकी कुशलता को देख, इतनी सदियों के बाद भी, उनके अन्तकरण के सारे भावों का अनुभव होने लगता है।''[११] सरदार जी ने निबन्ध में सार्थकता व भाषाशैली का सटीक चित्रण करने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के लिए आर्थिक जगत से कुछ शब्दो को उठाया है-जैसे कुछ पंक्तियां-''मजदूरी तो मनुष्य के समष्टि रूप का व्यष्टि रूप परिणाम है, आत्मा रूपी धातु के गढे हुए सिक्के का नकदी बयाना है, जो मनुष्यों की आत्माओं को खरीदने के वास्ते दिया है।[१२]

आचार्य हजारीप्रसाद दविवेदी जी ने अपने निबंध 'कुटज' में प्रकति का मनोरम चित्रण किया है,'' शिवालिक की सुखी नीरस पहाड़ियों पर मुस्कराते हुए से वृक्ष है, अलमस्त है। मैं किसी का नाम नही जानता, कुल नही जानता, शील जानता, पर लगता है ये जैसे मुझे अनादि काल से जानते है। इन्ही में एक छोटा-सा बहुत ही ठिंगना-पेड़ है, पते चौड़े भी है, फूलों से तो ऐसा लदा है कि कुछ पूछिए नहीं। अजीब सी अदा है, मुस्कराता जान पड़ता है। लगता है, पूछ रहा है कि क्या तुम भी नही पहचानतें?''[१३]

हिन्दी निबंध में हिन्दी की अन्य विधाओं औयर सहित्यकारों का जिक्र भी किया गया है। पं० शांतिप्रिय द्विवेदी जी ने अपने निबन्ध 'गोदान और प्रेमचन्द' में कथाकार सम्राट की रचनाओं में उठाई गई समस्याओं पर प्रकाश डाला है। जैसे-''कभी कहा जाता था कि प्रेमचन्द जी सामाजिक समस्याओं और आन्दोलनो को अपना कर नेताओ द्वारा परिचालित सुधारों को ही जनता के सम्मुख उपस्थित करते रहे है। इस दृष्टि से वे समय-समय पर राजनीतिक और सामाजिक नेताओं के एक साहित्यिक अनुयायी रहे। परन्तु, यह 'गोदान' तो एक और ही कृति है। इसमें वे न तो किसी के अनुयायी है औरन किसी के प्रचारक, बल्कि एक तटस्थ उपन्यासकार है।''[१४] 'गोदान' प्रेमचन्द जी के जीवन की सबसे बड़ी हाय है। अब तक उन्होने चरित्र को व्यक्तिगत साधना के रूप मे देखा था। मिर्जा, मेहता, मालवी गोविन्दी अब भी इस रूप में इस उपन्यास में सम्मिलित है, प्रेमचन्द जी की पुरानी चित्र कला के नमूने होकर। हों पहिले उनका दृष्टिकोण केवल नैतिक था, किन्तु अब 'गोदान' में आर्थिक भी हो गया है। गोदान शब्द तो अब तक की नैतिकता, धार्मिकता, दार्शनिकता का एक प्रतीक मात्र रह गया है। इस उपन्यास का आर्थिक पक्ष संकेत करता है कि आज धर्म के लिए पथ कहां रह गया है? -''धनिया यन्त्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी उसके बीस आने पैसे लाई और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली, महाराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे है, यही इनका गोदान है।'' इस प्रकार आज की आर्थिक ट्रेजेड़ी में धन ही जीवन का मोक्ष बन गया है, प्राणी नगण्य हो गया है। वह अर्थ और धर्म दोनों ही द्वारा शोषित है।[१५]

निष्कर्षः- निष्कर्षतः कह सकते है कि हिन्दी निबन्धकारों में विषय की व्यापकता एवं विविधता है। हिन्दी निबंधो में वैयक्तिकता के साथ-साथ सामाजिकता का भी समावेश है। निबंध लेखकों की शैली में हास्य व्यंग्य एवं मनोरंजन की प्रधानता है। इन निबधों का प्रमख उद्देश्य राजनीतिक विभ्रमता और सामाजिक कुरीतियो पर चोट करना रहा है।

संदर्भः-

१. शिव प्रसाद सिंह- हिन्दी निबन्ध पृष्ठ सं०-५
कश्यप प्रकाशन, मल्लिक स्ट्रीट, कलकता

२. शिव प्रसाद सिंह-हिन्दी निबन्ध पृष्ठ सं०-६
कश्यप प्रकाशन, मल्लिक स्ट्रीट, कलकता

३. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - चिन्तामणि भाग-१, 'ईर्ष्या' निबध पृ० सं०-६२
साहित्य सागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर

४. श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्सी : निबंध-मोटर स्टैण्ड पर, निबन्धलोक डॉ शम्भूनाथ सिंह पृष्ठ सं० ७२
लोक भारती प्रकाशन, १५ ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

५. श्री हरिशंकर परसाई 'बेइमानी की परत' में संकलित निबन्ध 'घायल बसन्त' पृष्ठ सं० १५
वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

६. श्री हरिशंकर परसाई 'बेइमानी की परत' में संकलित निबन्ध 'पहिला सफेद बाल' पृष्ठ सं० १७
वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

७. डॉ० यश गुलाटी - बृहत साहित्यिक निबन्ध में संकलित 'हिन्दी में आत्मपरक निबन्ध' पृष्ठ सं० १६५
प्रकाशक : सूर्य भारती प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली

८. श्री उदय भानु सिंह- राधा कृष्ण मूल्यांकन माला पृष्ठ सं० १०
प्रकाशक : राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा० लि०, अंसारी रोड़, दारियागंज नई दिल्ली

९. डॉ० शम्भूनाथ सिंह-निबधालोक में संकलित महादेवी वर्मा का निबन्ध-'आलोपीदीन' पृष्ठ सं० १०७
प्रकाशक :-लोक भारती प्रकाशन, १५ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

१०. सरदार पूर्ण सिंह, मजदूरी और प्रेम, 'हिन्दी निबंध' डॉ० शिव प्रसाद सिंह पृष्ठ सं० ४३
कश्यप प्रकाशन, मल्लिक स्ट्रीट, कलकता

११. सरदार पूर्ण सिंह, मजदूरी और प्रेम, 'हिन्दी निबंध' डॉ० शिव प्रसाद सिंह पृष्ठ सं० ४६
कश्यप प्रकाशन, मल्लिक स्ट्रीट, कलकता

१२. सरदार पूर्ण सिंह, मजदूरी और प्रेम, 'हिन्दी निबंध' डॉ० शिव प्रसाद सिंह पृष्ठ सं० ४९
कश्यप प्रकाशन, मल्लिक स्ट्रीट, कलकता

१३. आचार्य हजारी प्रसाद दविवेदी, 'कुटज' 'निबन्धालोक' डॉ० शम्भूनाथ सिंह पृष्ठ सं० ९६
प्रकाशक :- लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

१४. पं० शांतिप्रिय द्विवेदी,- 'गोदान और प्रेमचन्द' 'निबन्धलोक' संपादक डॉ० शम्भूनाथ सिंह पृष्ठ सं० १५०
प्रकाशकः- लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

१५. पं० शांतिप्रिय दविवेदी- 'गोदान और प्रेमचन्द' 'निबन्धलोक' संपादक डॉ० शम्भूनाथ सिंह पृष्ठ सं० १५६
प्रकाशकः- लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१